Think IAS...

दृष्टि The Vision

Think Drishti

संघ लोक सेवा आयोग (UPSC)

इतिहास (वैकल्पिक विषय)

विश्व इतिहास (भाग–1)

दूरस्थ शिक्षा कार्यक्रम (Distance Learning Programme)

Code: CSHS08

संघ लोक सेवा आयोग (UPSC)

इतिहास (वैकल्पिक विषय)

विश्व इतिहास (भाग–1)

641, प्रथम तल, डॉ. मुखर्जी नगर, दिल्ली-110009
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501
टोल फ्री : 1800-121-6260
Web : www.drishtiIAS.com
E-mail : online@groupdrishti.com

पाठ्यक्रम, नोट्स तथा बैच संबंधी updates निरंतर पाने के लिये निम्नलिखित पेज को 'like' करें
www.facebook.com/drishtithevisionfoundation
www.twitter.com/drishtiias

UPSC DLP

विषय सूची (Contents)

1.	पुनर्जागरण	5–22
2.	प्रबोधन का युग	23–30
3.	समाजवादी विचारों का उद्‌भव (मार्क्स तक)	31–38
4.	अमेरिकी स्वतंत्रता संग्राम	39–54
5.	अमेरिकी गृह-युद्ध	55–59
6.	फ्राँस की राज्यक्रांति	60–86
7.	वियना कॉन्ग्रेस	87–117
8.	इंग्लैंड में संसदीय संस्थाओं का विकास	118–129
9.	औद्योगिक क्रांति	130–155

अध्याय
1

पुनर्जागरण (Renaissance)

1.1 पुनर्जागरण	1.4 धर्म सुधार आंदोलन
1.2 पुनर्जागरण की विभिन्न क्षेत्रों में अभिव्यक्ति/प्रभाव	1.5 प्रतिवादी धर्म सुधार आंदोलन
1.3 पुनर्जागरण : एक मनोदशा	1.6 वाणिज्यवाद

इस अध्याय को समझने हेतु हमें पुनर्जागरण, धर्म सुधार आंदोलन, प्रतिवादी धर्म सुधार आंदोलन, वाणिज्यवाद और प्रबोधन एवं आधुनिक विचारों के बारे में जानना आवश्यक है। बाद में हुई घटनाएँ स्पष्ट रूप से पहले हुई घटनाओं से प्रभावित हैं एवं एक-दूसरे से परस्पर जुड़ी हुई हैं।

1.1 पुनर्जागरण *(Renaissance)*

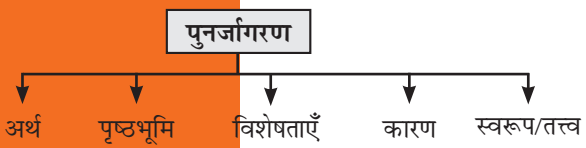

यूरोपीय इतिहास की विवेचना के संदर्भ में पुनर्जागरण काल सामान्यत: लगभग 1350 से 1550 ई. के बीच माना जाता है। परंतु कुछ इतिहासकार इसे 14वीं से लेकर 17वीं शताब्दी तक मानते हैं। पुनर्जागरण फ्रेंच शब्द 'रिनेसा' (Renaissance) से बना है, जिसका अर्थ होता है–पुनर्जन्म। पुनर्जन्म या पुनर्जागरण से तात्पर्य प्राचीन यूरोपीय संस्कृति के पुन: उत्थान से है। प्राचीन यूरोप में यूनानी एवं रोमन सभ्यता उन्नत अवस्था में थी जो मध्यकाल में लुप्तप्राय हो गई थी। अत: पुनर्जागरण एक उदार बौद्धिक एवं सांस्कृतिक आंदोलन था जिसमें प्राचीन यूरोप की प्रेरणा के आधार पर नए यूरोप का निर्माण हो रहा था। इसे आधुनिक विचारों, तर्क और विज्ञान के धरातल पर जाँचा और परखा गया था।

अर्थ

पुनर्जागरण का शाब्दिक अर्थ है - **"फिर से जागना"** किंतु यह किसी सोए हुए व्यक्ति का निद्रा से जागना नहीं बल्कि समस्त मानव का जागृत होना है। वस्तुत: यूरोप में पाँचवीं-छठी शताब्दी ईसा पूर्व के यूनानी रोमन साम्राज्य में सुकरात, प्लेटो, अरस्तू, पाइथागोरस जैसे अनेक विचारकों ने मानव विकास के अनेक आयामों को प्रस्तुत किया था जिसका मध्य युग में पतन हो गया था। वे पुन: तेरहवीं सदी के बाद सुषुप्तावस्था से जाग्रत् अवस्था में लौट आए। प्राचीन यूरोप की प्रेरणा के आधार पर आधुनिक यूरोप के निर्माण को प्रारंभ में पुनर्जागरण के नाम से विहित किया जाता है।

पृष्ठभूमि

- विद्वानों ने विश्व के इतिहास को तीन भागों में बाँटा है। प्रारंभ से पाँचवीं शताब्दी तक प्राचीन काल माना जाता है। यह युग रोम तथा यूनान की उन्नति का युग था। इस युग में मनुष्य सुखी था। धर्म का प्रभाव अभी तक मनुष्य जीवन पर स्थापित नहीं हुआ था तथा सामंती दुर्गुणों से भी यह काल मुक्त था। अत: प्राचीन काल को मनुष्य की खुशहाली तथा गौरव का युग माना जाता है।
- वस्तुत: तीसरी शताब्दी में रोमन साम्राज्य दो भागों- पूर्वी एवं पश्चिमी में विभाजित हो गया। पूर्वी रोमन साम्राज्य की राजधानी कुस्तुनतुनिया एवं पश्चिमी रोमन साम्राज्य की राजधानी रोम थी। जर्मन आक्रमणकारियों द्वारा पश्चिमी रोमन साम्राज्य पर निरंतर आक्रमण के फलस्वरूप पाँचवीं सदी (477 ई.) में इस साम्राज्य का विघटन हो गया। यहीं से यूरोप में सामंतवाद की शुरुआत मानी जाती है। पूर्वी रोमन साम्राज्य ने 1453 ई. तक अपना अस्तित्व बचाए रखा।

में नवीन राजनीतिक वर्जनाओं का अंत हुआ अथवा ढीली पड़ीं। राजनीतिक कठोरता के स्थान पर उदारता की ओर सोच बढ़ने लगी, जिससे अनेक राजनीतिक परिवर्तन भी आए। इंग्लैण्ड में घटित 1688 की रक्तहीन क्रांति इसका एक जीता-जागता नमूना है।

उपर्युक्त बिंदुओं से निष्कर्ष निकलता है कि वाणिज्यवाद ने परंपरागत आर्थिक व्यवस्था को झकझोर दिया था, जिससे मानव समाज के सभी पक्ष प्रभावित हुए। वाणिज्यवाद से केवल आर्थिक जीवन ही नहीं, बल्कि राजनीतिक, सामाजिक जीवन भी प्रभावित हुआ। इससे अनेक विश्व व्यवस्थाएँ भी उत्पन्न हुईं तथा विज्ञान, कला एवं साहित्य के क्षेत्र में भी नई प्रवृत्तियाँ आरंभ हुईं। वाणिज्यवाद का मूल्यांकन उपरोक्त बिंदुओं के आधार पर बखूबी किया जा सकता है। यदि एक वाक्य में कहें तो वाणिज्यवाद ने जो उथल-पुथल आरंभ की, उससे विश्व इतिहास के आधुनिककाल का शुभारंभ हुआ।

प्रबोधन एवं आधुनिक विचार (Enlightenment and Modern Ideas)

सोलहवीं और सत्रहवीं सदी में वैज्ञानिक क्रांति से पुरानी कुप्रथाएँ, अंधविश्वास और मान्यताएँ अमान्य होने लगीं और विश्व करवट बदलकर नए युग में प्रवेश करने को तत्पर हुआ। पहले जहाँ समस्याओं का समाधान चर्च या परंपराओं के अनुसार होता था और उन पर प्रश्न उठाने का मतलब अपनी जान से हाथ धोना था, जिसमें चर्च के साथ धर्मांध जनता भी शामिल होती थी। परंतु अब किसी भी समस्या के कारणों और उनके उपायों पर ध्यान दिया जाने लगा। परंपरागत पद्धतियों के बजाय तर्क, ज्ञान, निरीक्षण, प्रयोग और परीक्षण पर बल दिया गया, जिससे प्रकृति के गूढ़ रहस्यों को वैज्ञानिक आधार पर खोजा जा सके। यह युग वैचारिक क्रांति के दौर से गुजर रहा था जिसको पुनर्जागरण, धर्म सुधार आंदोलन, प्रतिवादी धर्म सुधार आंदोलन, वाणिज्यवाद, व्यापारिक-क्रांति और भौगोलिक खोजों द्वारा जन्मी नई प्रवृत्तियों से बल मिला। फलतः विश्व संबंधी आधुनिक दृष्टिकोण की नींव पड़ी। सत्रहवीं सदी तक ब्रह्मांड की जो व्याख्या चर्च और धार्मिक व्यक्तियों द्वारा की गई थी अब उसे वैज्ञानिक प्रयोगों द्वारा गलत सिद्ध कर दिया गया और प्रयोगों द्वारा सत्यापित होकर वास्तविकता संसार के समक्ष प्रस्तुत हुई।

मनुष्य जिस संसार में रह रहा था, उसने उसके बारे में तथा विभिन्न घटनाओं तथा उनके विविध रूपों, और प्रकृति के नियमों को समझने की कोशिश की। इस युग की वैज्ञानिक क्रांति ने धर्म, ईश्वर और मनुष्य संबंधित विचारधारा को ही बदल दिया। धीरे-धीरे यूरोप की मनोदशा में परिवर्तन होना प्रारंभ हुआ, लोग अलौकिकता से धर्म निरपेक्ष और धर्म विज्ञान से विज्ञान की ओर उन्मुख हुए एवं स्वर्ग और नर्क की सुखद और दुःखद संकल्पनाओं की वास्तविकता समझने लगे।

दीर्घउत्तरीय प्रश्न

1. इटली में पुनर्जागरण के उद्भव के कारण बताइये। **UPSC (Mains) 2007**
2. "पुनर्जागरण संसार और मानव की खोज थी।" टिप्पणी कीजिये। **UPSC (Mains) 2002**
3. "पुनर्जागरण विद्वानों ने अंडे दिये थे, जिनको बाद में धर्म-सुधार आंदोलन के जनक लूथर ने सेआ था।" चर्चा कीजिये।
4. "मानवतावाद पुनर्जागरण का स्रोत और परिणाम दोनों था।" टिप्पणी कीजिये।
5. "पुनर्जागरण राजनीतिक अथवा धार्मिक आंदोलन नहीं था, वह एक मनोदशा थी।" टिप्पणी कीजिये।
6. उसका (मार्टिन लूथर का) विद्रोह मूलतः राष्ट्रीय और लोकप्रिय था। समीक्षा कीजिये।
7. "पुनर्जागरण और सुधार आंदोलन आधुनिक इतिहास में बौद्धिक एवं नैतिक जीवन के नवीनीकरण के लिये दो प्रतिस्पर्द्धी स्रोत हैं।" टिप्पणी कीजिये।

अध्याय
2

प्रबोधन का युग
(The Age of Enlightenment)

2.1 प्रबोधन से जुड़ी विशेषताएँ
2.2 प्रबोधन युग के प्रमुख विचारक
2.3 रूसो
2.4 प्रबोधन का प्रभाव
2.5 यूरोप के बाहर प्रबोधन का विस्तार

यूरोप में 17वीं-18वीं शताब्दी में हुए क्रांतिकारी परिवर्तनों के कारण इस काल को प्रबोधन, ज्ञानोदय अथवा विवेक का युग कहा गया और **इसका आधार पुनर्जागरण, धर्म सुधार आंदोलन व वाणिज्यिक क्रांति ने तैयार कर दिया था।** पुनर्जागरण काल में विकसित हुई वैज्ञानिक चेतना तथा तर्क और अन्वेषण की प्रवृत्ति ने 18वीं शताब्दी में परिपक्वता प्राप्त कर ली। **वैज्ञानिक चिंतन की इस परिपक्व अवस्था को प्रबोधन के नाम से जाना जाता है।**

प्रबोधनकालीन चिंतकों ने इस बात पर बल दिया कि इस भौतिक दुनिया और प्रकृति में होने वाली घटनाओं के पीछे किसी न किसी व्यवस्थित, अपरिवर्तनशील और प्राकृतिक नियम का हाथ है। **फ्राँसिस बेकन** ने बताया कि विश्वास मज़बूत करने के तीन साधन हैं - **अनुभव**, **तर्क** व **प्रमाण** और इनमें सबसे अधिक शक्तिशाली **प्रमाण** है क्योंकि तर्क/अनुभव पर आधारित विश्वास अधिक समय तक स्थिर नहीं रहता।

2.1 प्रबोधन से जुड़ी विशेषताएँ *(Characteristics Related to Enlightenment)*

ज्ञान को विज्ञान के साथ जोड़ना

प्रबोधन के चिंतकों ने ज्ञान को प्राकृतिक विज्ञान के साथ जोड़ दिया। पर्यवेक्षण, प्रयोग और आलोचनात्मक छानबीन की व्यवस्थित पद्धति का प्रयोग ज्ञानोदय के चिंतकों की नज़र में सत्य तक पहुँचने का सक्षम आधार था। उनके मुताबिक ज्ञान को प्रयोग एवं परीक्षा योग्य होना चाहिये। इसके पास ऐसे प्रमाण होने चाहियें जो बोधगम्य हो और मानव मस्तिष्क की पहुँच में हों। ज्ञान की इसी धारणा के आधार पर प्रबोधन ने पराभौतिक अनुमान और ज्ञान में विरोध बताया।

प्रयोग एवं परीक्षण पर बल

मध्य युग में ईसाई मत का प्रभाव इसलिये माना जाता था क्योंकि ईश्वर द्वारा निर्मित इस दुनिया को मनुष्य नहीं जान सका। इस परिभाषा के मुताबिक यह दुनिया मानवीय बुद्धि के लिये अगम है। मनुष्य एवं ब्रह्मांड के बारे में सत्य का केवल **'उद्घाटन'** हो सकता है इसलिये उसे केवल पवित्र पुस्तकों के ज़रिये जाना जा सकता है। **"जहाँ ज्ञान का प्रकाश आलोकित नहीं होता, वहाँ विश्वास की ज्योति से रास्ता सूझता है।"** यही विश्वास मध्य युग की विशेषता थी।

ज्ञानोदय ने इस नज़रिये को खारिज़ कर दिया और दावा किया कि जिन चीज़ों को बुद्धि के प्रयोग व व्यवस्थित पर्यवेक्षण से नहीं जाना जा सकता, वे मायावी हैं। मनुष्य ब्रह्मांड के रहस्यों को पूरी तरह समझ सकता है। प्रकृति के बारे में हमें पवित्र पुस्तकों के माध्यम से नहीं बल्कि प्रयोगों एवं परीक्षाओं के माध्यम से बात करनी चाहिये।

कार्य-कारण संबंध का अध्ययन

कार्य-कारण संबंध का अध्ययन विज्ञान संबंधी प्रबोधन चिंतन का केंद्रीय तत्त्व था। चिंतकों ने ऐसी पूर्ववर्ती घटना को चिह्नित करने की कोशिश की जिसका होना किसी परिघटना के पैदा होने के लिये अनिवार्य है और पूर्ववर्ती घटना के न होने से परवर्ती घटना पैदा नहीं होती। **वस्तुतः कारणों की खोज प्राकृतिक एवं सामाजिक वातावरण पर मनुष्य का नियंत्रण बढ़ाने के साधन के रूप में की जाने लगी।**

अध्याय
3

समाजवादी विचारों का उद्‌भव (मार्क्स तक)
[Emergence of Socialist Ideas (Till Marx)]

3.1 सेंट साइमन	3.4 लुई ब्लाँ
3.2 चार्ल्स फूरियर	3.5 कार्ल मार्क्स एवं वैज्ञानिक समाजवाद
3.3 रॉबर्ट ओवेन	3.6 मार्क्सवाद का मूल्यांकन

एक विचारधारा के रूप में समाजवादी विचारों का उदय 18वीं शताब्दी में हुई औद्योगिक क्रांति के परिणामस्वरूप हुआ। इंग्लैंड से शुरू हुई औद्योगिक क्रांति 19वीं सदी के अंतिम दशकों में यूरोप के कई अन्य देशों में फैल गई। परिणामतः समाज में दो नए वर्गों का उदय हुआ। पहला, पूंजीपति अथवा बुर्जुआ वर्ग जो उद्योगों का मालिक था और व्यापार-वाणिज्य पर जिसका कब्जा था। दूसरा, औद्योगिक मज़दूर वर्ग या सर्वहारा वर्ग था जो मज़दूरी के लिये कार्य करता था। पूंजीपतियों के निहित स्वार्थों एवं मिल मालिकों की श्रमिक विरोधी नीति के कारण श्रमिकों का जीवन नारकीय हो गया तथा उनकी आर्थिक एवं सामाजिक स्थिति निम्नतर होती गई। उत्पादन की प्रक्रिया में शामिल यह वर्ग भूखे मरने की स्थिति में पहुँच गया। फलस्वरूप इन मज़दूरों की स्थिति में सुधार के लिये कई विचारक, लेखक सामने आए तथा एक नवीन विचारधारा का प्रतिपादन किया और इस तरह समाजवादी आंदोलन का प्रादुर्भाव हुआ। इसने मज़दूरों की न सिर्फ मांगों को आगे बढ़ाने का प्रयास किया बल्कि पूंजीवादी व्यवस्था को उखाड़ फेंकने के लिये उनको लामबंद भी किया। इन विचारकों और चिंतकों में रॉबर्ट ओवेन, सेंट साइमन, लुई ब्लाँ, कार्ल मार्क्स के नाम प्रमुख हैं।

- समाजवादी विचारधारा के विकास को दो चरणों में बाँट कर देखा जा सकता है -
  1. मार्क्स पूर्व
  2. मार्क्स के पश्चात्।

मार्क्स के पूर्ववर्ती समाजवादी विचारधारा को यूटोपिया (Utopia) नाम दिया गया जबकि मार्क्स के समाजवादी सिद्धांत को वैज्ञानिक समाजवाद नाम दिया गया।

- **मार्क्स पूर्व के** समाजवाद को स्वप्नदर्शी समाजवाद (Utopian) की संज्ञा इसलिये दी गई है क्योंकि वह यथार्थ से एकदम कटा हुआ है। इन चिंतकों ने तत्कालीन दशा से ऊपर उठकर अपने मन के असंतोष को स्वप्नलोक की मधुर कल्पनाओं में बहलाने की कोशिश की थी। उनकी कल्पना थी कि इस स्वप्नलोक में धनवान और निर्धन का भेद मिट जाएगा, संपत्ति सबकी होगी और अन्याय का कहीं नामोनिशान नहीं होगा। उन चिंतकों ने यह नहीं बताया कि उनके आदर्श समाज को यथार्थ के धरातल पर कैसे उतारा जाएगा।

मार्क्स ने वर्ग संघर्ष को एक ऐतिहासिक तत्त्व के रूप में स्थापित करके सर्वहारा (Proletariat) को क्रांति की प्रेरणा दी। अतः मार्क्स ने अपने समाजवाद को **वैज्ञानिक समाजवाद** कहा। स्वप्नदर्शी समाजवादियों में सेंट साइमन, चार्ल्स फ्यूरिए, रॉबर्ट ओवेन, लुई ब्लाँ प्रमुख हैं।

3.1 सेंट साइमन *(Saint Simon)*

सेंट साइमन 19वीं शताब्दी के आरंभ का फ्राँसीसी दार्शनिक और समाज-सुधारक था। उसने The New Christianity (द न्यू क्रिश्चियनिटी) में अपने समाजवादी विचारों का प्रतिपादन किया। सेंट साइमन ने दो प्रमुख वर्गों की पहचान की- **एक** उत्पादक या उद्योगपति और **दूसरा** परोपजीवी (Parasites)। सेंट साइमन ने भावी समाज की कल्पना **वर्गहीन समाज** (Classless society) के **रूप में नहीं की बल्कि** यह विचार रखा कि मध्यवर्ग (बुर्जुआ), वैज्ञानिक और सर्वहारा समान रूप से उत्पादक वर्ग के सदस्य होंगे। ये सब सामंतवाद विरोधी संघर्ष में स्वाभाविक सहयोगी हैं और भावी औद्योगिक प्रणाली से बराबर लाभान्वित होंगे। सेंट साइमन ने श्रमिक हितों की सुरक्षा के लिये **'कार्य के अनुसार मज़दूरी और क्षमता के अनुसार**

अध्याय
4

अमेरिकी स्वतंत्रता संग्राम (American War of Independence)

4.1 क्रांति से पूर्व अमेरिका की स्थिति
4.2 अमेरिकी स्वतंत्रता संग्राम के कारण
4.3 अमेरिकी क्रांति का आरंभ
4.4 अमेरिका के स्वतंत्रता संग्राम के परिणाम
4.5 अमेरिकी स्वतंत्रता संग्राम- 'प्रकृति'
4.6 अमेरिकी संविधान का निर्माण
4.7 अमेरिकी संविधान का महत्त्व

अमेरिकी स्वतंत्रता संग्राम ने यूरोपीय उपनिवेशवाद के इतिहास में एक नया मोड़ ला दिया। उसने अफ्रीका, एशिया एवं लैटिन अमेरिका के राज्यों की भावी स्वतंत्रता के लिये एक पद्धति तैयार कर दी। इस प्रकार अमेरिका के युद्ध का परिणाम केवल इतना ही नहीं हुआ कि 13 उपनिवेश मातृदेश ब्रिटेन से अलग हो गए बल्कि वे उपनिवेश एक तरह से नए राजनीतिक विचारों तथा संस्थाओं की प्रयोगशाला बन गए। इन्होंने पहली बार 16वीं व 17वीं शताब्दी के यूरोपीय उपनिवेशवाद और वाणिज्यवाद को चुनौती देकर विजय प्राप्त की। अमेरिकी उपनिवेशों को इंग्लैंड के आधिपत्य से मुक्ति के लिये संघर्ष इतिहास के अन्य संघर्षों से भिन्न था। यह संघर्ष न तो गरीबी से उत्पन्न असंतोष का परिणाम था और न यहाँ की जनता सामंतवादी व्यवस्था से पीड़ित थी। अमेरिकी उपनिवेशों ने अपनी स्वच्छंदता और व्यवहार में स्वतंत्रता बनाए रखने के लिये इंग्लैंड सरकार की कठोर औपनिवेशिक नीति के विरुद्ध संघर्ष किया था। इस तरह 18वीं शताब्दी के उत्तरार्द्ध में घटित अमेरिका का स्वतंत्रता संग्राम विश्व इतिहास की एक महत्त्वपूर्ण घटना है।

चित्र: अमेरिकी महाद्वीप में यूरोपीय उपनिवेश

4.1 क्रांति से पूर्व अमेरिका की स्थिति *(Status of America Before Revolution)*

इंग्लैंड एवं स्पेन के मध्य **1588 ई.** में भीषण नौसैनिक युद्ध हुआ जिसमें स्पेन की पराजय हुई और इसी के साथ ब्रिटिश नौसैनिक श्रेष्ठता की स्थापना हुई और इंग्लैंड ने अमेरिका में अपनी औपनिवेशिक बस्तियाँ बसाई। 1775 ई. तक अमेरिका में **13 ब्रिटिश उपनिवेश** बसाए जा चुके थे। इन अमेरिकी उपनिवेशों को भौगोलिक दृष्टि से तीन भागों में विभाजित किया जा सकता है:

उत्तरी भाग - **मेसाचुसेट्स, न्यू हैंपशायर एवं रोड्स द्वीप**। ये पहाड़ी और बर्फीले क्षेत्र थे। अत: कृषि के लायक न थे। इंग्लैंड को यहाँ से मछली और लकड़ी प्राप्त होती थी।

मध्य भाग - **न्यूयार्क, न्यूजर्सी एवं मैटीलैंड** आदि थे। इन क्षेत्रों में शराब और चीनी जैसे उद्योग थे।

दक्षिणी भाग - **उत्तरी कैरोलीना, दक्षिणी कैरोलीना, जॉर्जिया एवं वर्जीनिया** आदि थे। यहाँ की जलवायु गर्म थी। अत: ये प्रदेश खेती के लिये उपयुक्त थे। यहाँ मुख्यत: अनाज, गन्ना, तंबाकू, कपास और बागानी फसलों का उत्पादन होता था।

- इन उपनिवेशों में 90% अंग्रेज़ और 10% डच, जर्मन, फ्राँसीसी, पुर्तगाली आदि थे। इस तरह अमेरिकी उपनिवेश **पश्चिमी दुनिया तथा नई दुनिया दोनों के हिस्सा** थे। वस्तुत: पश्चिमी दुनिया का हिस्सा इसलिये कि यहाँ आकर बसने वाले

अध्याय
5

अमेरिकी गृह-युद्ध (American Civil War)

5.1 अमेरिकी गृह-युद्ध के प्रमुख कारण
5.2 गृह-युद्ध के दौरान लिंकन की भूमिका
5.3 अमेरिकी गृह-युद्ध का परिणाम

अमेरिकी स्वतंत्रता संग्राम के पश्चात् अमेरिका एक स्वतंत्र राष्ट्र के रूप में विश्व के मानचित्र पर स्थापित हुआ और उसने विश्व का पहला लिखित संविधान बनाकर संघीय शासन प्रणाली की स्थापना की। इस स्वतंत्रता संग्राम में सभी अमेरिकी राज्यों ने एकजुट होकर उपनिवेशवाद के विरुद्ध संघर्ष किया था किंतु 1860 के दशक में अमेरिकी राज्यों के बीच ही गृह-युद्ध छिड़ गया।

5.1 अमेरिकी गृह-युद्ध के प्रमुख कारण *(Major Causes of American Civil War)*

इसी बिंदु पर यह सवाल उठता है कि आखिर अमेरिकी गृह-युद्ध के क्या कारण थे? कुछ इतिहासकारों का मानना है कि अमेरिकी स्वतंत्रता संग्राम में ही गृह-युद्ध के बीज निहित थे तो कुछ गृह-युद्ध को पूंजीवादी आंदोलन मानते हैं तथा कुछ इतिहासकारों ने दास प्रथा को गृह-युद्ध के लिये जिम्मेदार ठहराया है। अमेरिकी गृह-युद्ध संयुक्त राज्य अमेरिका के उत्तरी और दक्षिणी राज्यों के बीच 1861-1865 के मध्य चार वर्षों तक चला। इस युद्ध के निम्नलिखित कारण देखे जा सकते हैं-

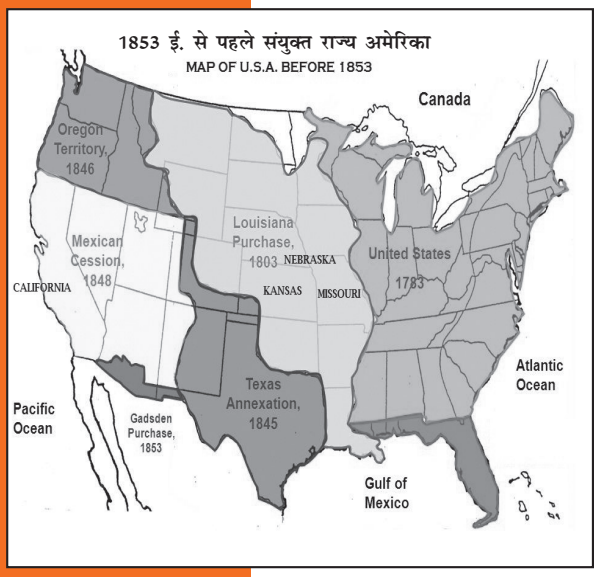

1. **उत्तरी एवं दक्षिणी राज्यों के बीच आर्थिक विषमता:** संयुक्त राज्य अमेरिका के उत्तरी राज्यों की स्थिति जननांकीय एवं आर्थिक दृष्टि से अपेक्षाकृत मजबूत थी। संघ के 34 राज्यों में से 23 राज्य उत्तर में सम्मिलित थे और देश की कुल जनसंख्या का 2/3 भाग उत्तर में रहता था, जिसमें दासों की संख्या बहुत कम थी। उत्तरी राज्यों में **उद्योगों की प्रधानता** थी। उद्योगों में सूती, ऊनी वस्त्र, चमड़े के सामान आदि वस्तुएँ बड़े पैमाने पर उत्पादित होती थीं। इन कारखानों में मज़दूरों द्वारा मशीनों से उत्पादन किया जाता था, अत: यहाँ गुलामों एवं दासों का विशेष महत्त्व नहीं था।

   दूसरी तरफ अमेरिका के दक्षिणी राज्यों का आर्थिक जीवन कृषि पर आधारित था और कृषि में यंत्रों का बहुत अधिक प्रयोग नहीं होता था। अत: इन राज्यों के किसान खेती के लिये गुलामों के श्रम पर निर्भर थे। दक्षिण में कपास, गन्ना एवं तंबाकू की खेती बहुत बड़े पैमाने पर होती थी जिनमें दास मज़दूर के रूप में कार्य करते थे। अत: दक्षिण का समाज पूर्ण रूप से दासों पर निर्भर था। इस तरह दक्षिणी राज्य, उत्तरी एवं पश्चिमी भागों से अपनी जिन विशेषताओं की वजह से अलग से पहचाने जाते थे, वे थे- वहाँ प्रचलित दास व्यवस्था और बागान व्यवस्था। दक्षिणी राज्य प्रमुख रूप से - वर्जीनिया से लेकर दक्षिणी कैरोलिना होते हुए जॉर्जिया तक एक पट्टी के रूप में फैले थे। इस प्रकार आर्थिक विषमता के कारण उत्तरी एवं दक्षिणी राज्यों के आर्थिक जीवन, राजनीतिक विचारधारा और सामाजिक स्तर में बहुत बड़ा मतभेद था।

अध्याय
6

फ्राँस की राज्यक्रांति (The French Revolution)

6.1 फ्राँस की क्रांति के कारण
6.2 फ्राँस की क्रांति के विभिन्न चरण
6.3 फ्राँसीसी क्रांति का प्रभाव
6.4 फ्राँसीसी क्रांति: स्वरूप/प्रकृति
6.5 नेपोलियन बोनापार्ट का उदय
6.6 नेपोलियन के सुधार
6.7 नेपोलियन एक सम्राट के रूप में
6.8 नेपोलियन की महाद्वीपीय व्यवस्था
6.9 नेपोलियन के पतन के कारण

आधुनिक युग में जिन महापरिवर्तनों ने पाश्चात्य सभ्यता को हिला दिया उसमें फ्राँस की राज्यक्रांति सर्वाधिक नाटकीय और जटिल साबित हुई। इस क्रांति ने केवल फ्राँस के ही नहीं अपितु समस्त यूरोप के जन-जीवन को अस्त-व्यस्त कर दिया। क्रांति से पूर्व (1789) फ्राँस में जो राजनीतिक, सामाजिक और आर्थिक परिस्थितियाँ मौजूद थीं उनके लिये **पुरातन व्यवस्था** (Ancient regime) शब्द का प्रयोग किया जाता है। राजनीतिक दृष्टि से इस शब्द का अभिप्राय है - **निरंकुश शासकों का नौकरशाहों तथा सेनाओं की सहायता से शासन।** आर्थिक दृष्टि से यह शब्द उस स्थिति का द्योतक है जिसमें खेती की प्रधानता हो, माल का अभाव हो, परिवहन धीमा हो, वित्तीय संस्थाएँ अनुभवहीन व अकुशल हों और कुछ मामलों में प्रतिस्पर्द्धात्मक समुद्र पार वाणिज्यिक साम्राज्य विद्यमान हो। सामाजिक रूप से एक विशिष्ट आभिजात्यवर्ग था जिसे वंशानुगत रूप से अनेक प्रकार के विशेषाधिकार प्राप्त था सुस्थापित चर्च व्यवस्था थी। शहरी श्रमिक दल और एक ग्रामीण कृषक वर्ग था जो ऊँचे करों एवं सामंती लगानों के भारी बोझ तले सदैव दबा रहने को मजबूर था।

- फ्राँस की पुरातन व्यवस्था अपनी समस्त चमक के बावजूद अव्यवस्था के लक्षणों को छिपाने में असमर्थ थी। इस समय वस्तुतः पूरा यूरोप ही जर्जर हो चुका था। बस यही स्पष्ट नहीं था कि वह जर्जर यूरोप टूटकर गिरेगा कहाँ पर। गिरना तो निश्चित ही था। 1789 के मध्य में वह चरमरा कर फ्राँस में ही गिरा क्योंकि क्रांति के लिये वहीं सबसे अनुकूल स्थिति थी।

6.1 फ्राँस की क्रांति के कारण *(Causes of the French Revolution)*

राजनीतिक कारण

फ्राँस में निरंकुश राजतंत्र था जो राजत्व के दैवी सिद्धांत पर आधारित था। इसमें राजा को असीमित अधिकार प्राप्त थे और राजा स्वेच्छाचारी था। **लुई 14वें** के शासनकाल में (1643-1715), निरंकुशता अपनी पराकाष्ठा पर थी। उसने कहा- **"मैं ही राज्य हूँ"** (I am the State)। वह अपनी इच्छानुसार कानून बनाता था। उसने शक्ति का अत्यधिक केंद्रीकरण राजतंत्र के पक्ष में कर दिया। कूटनीति और सैन्य कौशल से फ्राँस का विस्तार किया। इस तरह उसने राजतंत्र को गंभीर पेशा बनाया।

- **लुई 14वें** ने जिस शासन व्यवस्था का केंद्रीकरण किया था उसमें योग्य राजा का होना आवश्यक था किंतु उसके उत्तराधिकारी लुई 15वें एवं 16वें

अध्याय
7

वियना कॉन्ग्रेस
(Congress of Vienna)

7.1 वियना कॉन्ग्रेस	7.4 राष्ट्रीयताओं के आविर्भाव से साम्राज्यों का विघटन
7.2 मेटरनिक व्यवस्था	7.5 यूरोपीय राज्य प्रणाली
7.3 राष्ट्र-राज्य प्रणाली	7.6 क्रांतियों का युग: 1830–1848 ई.

7.1 वियना कॉन्ग्रेस *(Vienna Congress)*

नेपोलियन को वाटरलू की पराजय के पश्चात् सेंट हेलेना द्वीप निर्वासित कर दिया गया था। तत्पश्चात् ऑस्ट्रिया की राजधानी वियना में यूरोप की विजयी शक्तियाँ 1815 में एकत्रित हुईं। इनका उद्देश्य था यूरोप के उस मानचित्र को पुनर्व्यवस्थित करना जिसे नेपोलियन ने अपने युद्ध और विजयों से उलट-पलट दिया था। वस्तुत: ऑस्ट्रिया के चांसलर मेटरनिक ने नेपोलियन के विरुद्ध मोर्चा बनाने में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाई थी, इसलिये उसकी पहल पर ऑस्ट्रिया की राजधानी वियना में कॉन्ग्रेस बुलाई गई थी। इस सम्मेलन में यूरोप के कई छोटे-छोटे देश शामिल हुए किंतु नीति निर्माण के संबंध में चार मुख्य देशों के प्रतिनिधियों की भूमिका महत्त्वपूर्ण रही। ये नेता थे – ऑस्ट्रिया का चांसलर मेटरनिक, रूस का जार एलेक्जेंडर, इंग्लैंड का विदेश मंत्री लॉर्ड कैसलरे तथा फ्राँसीसी विदेश मंत्री तैलरा।

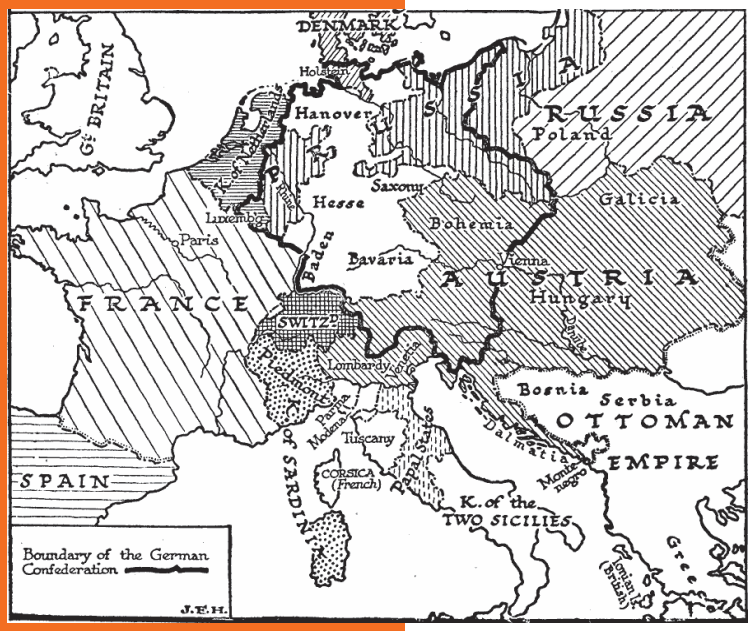

चित्र: वियना कॉन्ग्रेस के पश्चात् यूरोपीय राज्य

वियना कॉन्ग्रेस के समक्ष समस्याएँ

1. नेपोलियन ने फ्राँसीसी क्रांति के उच्चादर्शों को पूरे यूरोप में फैलाया था। इन सिद्धांतों को कैसे रोका जाए जिससे बढ़ती राष्ट्रीयता की भावना अन्य साम्राज्यों को विखंडित न कर दे।
2. नेपोलियन द्वारा विजित क्षेत्रों के साथ किस प्रकार की नीति अपनाई जाए।
3. कुछ राष्ट्रों ने स्वेच्छा से तो कुछ ने डर कर नेपोलियन का साथ दिया था। इनके साथ कैसा सुलूक किया जाए?
4. वियना कॉन्ग्रेस में मेटरनिक और जार प्रतिक्रियावादी थे तो कैसलरे एवं तैलरा उदारवादी। ऐसी स्थिति में फ्राँस के साथ किये जाने वाले बर्ताव को लेकर मतभेद भी कायम था।

वियना कॉन्ग्रेस के प्रमुख उद्देश्य

- नेपोलियन द्वारा उलट-पलट दिये गए यूरोप के राजनीतिक मानचित्र को सुधार कर पुन: स्थापित करना।
- फ्राँसीसी क्रांति के जनतंत्र, राष्ट्रवाद आदि के प्रसार को रोकना।

अध्याय
8

इंग्लैंड में संसदीय संस्थाओं का विकास
(Development of Parliamentary Institutions in England)

8.1 संवैधानिक सुधार
8.2 ब्रिटिश लोकतांत्रिक राजनीति का विकास
8.3 1815 के पश्चात् लोकतांत्रिक प्रक्रिया का विकास
8.4 मुक्त व्यापारी
8.5 चार्टिस्ट आंदोलन (1838-1848)

8.1 संवैधानिक सुधार *(Constitutional Reforms)*

इंग्लैंड में संविधान का विकास वहाँ के निवासियों के कई सदियों के राजनीतिक अनुभवों एवं प्रयोगों का परिणाम था। इसका विकास अपेक्षाकृत धीमा एवं क्रमिक रूप से हुआ। इंग्लैंड के **संवैधानिक विकास** काल को अधोलिखित भागों में बाँटा जा सकता है-

- एंग्लो-सैक्सन काल
- नॉर्मन काल
- हैनोवर काल
- प्लेंटाजेनेट काल
- लंकास्टर काल
- ट्यूडर काल
- स्टुअर्ट काल

1. एंग्लो-सैक्सन काल

इंग्लैंड का संवैधानिक विकास सर्वप्रथम सैक्सन काल से ही आरंभ होता है। इसी काल में इंग्लैंड में सर्वप्रथम सात छोटे-छोटे राज्य, यथा-ईस्ट एंगिलिया, मरसिया, नार्थंबरलैंड, केंट, ससेक्स और वेसेक्स अस्तित्व में आए जिन्हें मिलाकर अल्फ्रेड महान ने एक विशाल साम्राज्य की स्थापना की। इसी समय से इंग्लैंड में राजतंत्र का प्रारंभ माना जाता है।

- इस काल में राजा पूर्णतया निरंकुश नहीं होता था। उसकी स्थिति उसकी योग्यता, बुद्धि शक्ति, कार्यकुशलता और कूटनीति पर निर्भर करती थी। राजा की सहायता के लिये एक संस्था की व्यवस्था थी, जिसे विटन या विटेनागमाट कहा जाता था। इसका सभापति राजा स्वयं होता था और इसके सदस्यों, मुख्य पादरियों एवं अधिकारियों की नियुक्ति वह स्वयं करता था। विटन राजा को कानूनों और संधियों के संबंध में परामर्श देती थी तथा सर्वोच्च न्यायालय के रूप में राजा के साथ बैठा करती थी। यदि राजा मनमानी करे तो यह उसको गद्दी से उतार भी सकती थी। यही कारण रहा कि सैक्सन राजाओं की प्रवृत्ति कभी भी निरंकुश नहीं हो सकी। सैक्सन काल की एक और विशेषता यह है कि उस काल में स्थानीय निकायों के विकास की प्रक्रिया शुरू हुई। इस प्रकार इस काल में ब्रिटिश सरकार की दो संस्थाओं राजतंत्र एवं स्थानीय निकाय का विकास हुआ।

2. नॉर्मन काल

- इंग्लैंड में राजनीतिक संगठन का स्वरूप 11वीं शताब्दी में नॉर्मन विजय के पश्चात् अधिक स्पष्ट हो जाता है। 1066 ई. में नार्मंडी (फ्राँस) के ड्यूक विलियम प्रथम ने सैक्सन के राजा हेराल्ड को पराजित कर इंग्लैंड को अपने अधिकार में कर लिया। नॉर्मन सम्राटों ने सामंती व्यवस्था को प्रारंभ किया किंतु उन्होंने सैक्सनकालीन लोकतांत्रिक संस्थाओं को भंग नहीं किया। सैक्सन काल की विटन संस्था को महापरिषद कहा जाने लगा। इसकी शक्तियाँ व्यवहार में विटन की अपेक्षा कम थीं क्योंकि राजा अब अधिक शक्तिशाली हो गया था। यह राजा के उच्च न्यायालय और परामर्शदात्री संस्था के रूप में कार्य करती थी। चूँकि महापरिषद एक बड़ी संस्था थी तथा इसकी बैठक वर्ष में केवल तीन बार ही हो पाती थी इसलिये इसमें से एक छोटी संस्था का विकास हुआ जिसे 'छोटी परिषद' या 'क्यूरिया रिजिस' कहा जाता था। इस संस्था में शाही घराने के कुछ अधिकारी जैसे चांसलर, चेंबरलेन, कोंसटेबल और स्टीवर्ड होते थे जो सम्राट

अध्याय
9

औद्योगिक क्रांति (Industrial Revolution)

9.1 औद्योगिक क्रांति के कारण	9.5 अन्य देशों में औद्योगिक क्रांति का प्रसार
9.2 इंग्लैंड में औद्योगिक क्रांति का आरंभ	9.6 समाजवादी औद्योगीकरण
9.3 औद्योगिक क्रांति का प्रभाव	9.7 आधुनिक औद्योगिक क्रांति (चतुर्थ औद्योगिक क्रांति)
9.4 यूरोपीय देशों में औद्योगीकरण का प्रसार	9.8 वैश्वीकरण

- **'औद्योगिक क्रांति'** शब्द का सर्वप्रथम प्रयोग इंग्लैंड के आर्थिक इतिहासकार **ऑर्नाल्ड टायनबी** ने किया। इनके अनुसार औद्योगिक क्रांति ने मानव जीवन को तीव्र गति व अत्यधिक गहरे रूप में प्रभावित किया। वस्तुतः औद्योगिक क्रांति उत्पादन प्रणाली में परिवर्तन था, जिसके तहत शिल्प के स्थान पर शक्ति संचालित यंत्रों से काम लिया जाने लगा तथा औद्योगिक संगठन में भी परिवर्तन हुआ।
- 18वीं सदी के उत्तरार्द्ध एवं 19वीं सदी में ब्रिटिश उद्योगों को अनेक महत्त्वपूर्ण एवं व्यापक परिवर्तनों से गुज़रना पड़ा जिसके कारण इन परिवर्तनों को समवेत रूप में औद्योगिक क्रांति कहा जाने लगा। वस्तुतः यह कोई आकस्मिक घटना नहीं अपितु विकास की एक सतत् प्रक्रिया थी। औद्योगिक क्रांति के अंतर्गत बहुत सारे परिवर्तन हुए। उत्पादन कार्य जो पहले हाथ से किये जाते थे अब मशीनों से होने लगे। नवीन आधारभूत धातुओं मुख्यतः लोहे के मिश्रण के साथ निर्मित धातु का प्रयोग होने लगा। नवीन ऊर्जा स्रोतों जैसे - कोयला, पेट्रोलियम, विद्युत, वाष्प इंजन, ताप इंजन आदि का उपयोग होने लगा। उत्पादन अब कारखानों में किया जाने लगा जिसमें श्रम विभाजन, कार्य कुशलता तथा विशेषज्ञ कार्यशीलता का समावेश था। कारखाना प्रणाली के उद्भव और विकास के फलस्वरूप पूंजीवाद का उदय हुआ और पूंजी संचय की प्रवृत्ति को बढ़ावा मिला। वाष्प चालित रेल इंजन और यंत्र चालित जहाज़ों के कारण यातायात में आमूलचूल परिवर्तन हो गया। अंतर्राष्ट्रीय व्यापार में वृद्धि हुई, सामाजिक संरचना में परिवर्तन हुआ। सामंतों की जगह उद्योगपति एवं बुर्जुआ वर्ग अस्तित्व में आए। वस्तुतः यह परिवर्तन 18वीं सदी के उत्तरार्द्ध में अत्यंत तीव्र गति से हुए और इनके परिणाम भी क्रांतिकारी एवं युगांतकारी थे। अतः इन परिवर्तनों को औद्योगिक क्रांति के नाम से जाना गया।

9.1 औद्योगिक क्रांति के कारण *(Causes of Industrial Revolution)*

- **पुनर्जागरण एवं धर्म सुधारः** पुनर्जागरण से यूरोप में आधुनिक युग की शुरुआत हुई। भौतिक एवं तार्किक विचारों की प्रगति ने विज्ञान के विकास में सहयोग प्रदान किया। विज्ञान के विकास ने तकनीकी एवं प्रौद्योगिकी का विकास किया। पुनर्जागरण ने भौगोलिक खोजों को भी प्रोत्साहित किया, जिसके फलस्वरूप यूरोप के लोगों को भौतिक एवं मानव संसाधनों का एक विस्तृत खजाना प्राप्त हो गया।

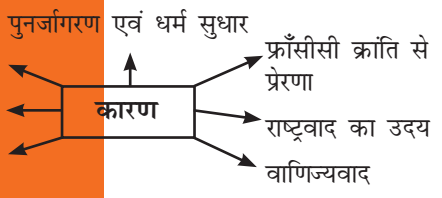

- **कृषि क्रांतिः** कृषिगत क्रांति के द्वारा मध्ययुगीन खुले व बिखरे खेतों को एकीकृत कर बड़े पैमाने पर कृषि आरंभ हुई जिससे फसल उत्पादन में वृद्धि हुई। इससे उद्योगों हेतु कच्चे माल के रूप में इस्तेमाल किये जाने वाले कृषोपज की उपलब्धता प्रचुर मात्रा में हुई। साथ ही एकीकृत कृषि से बेरोज़गार हुए लोगों से कारखानों में मज़दूरों की पूर्ति हुई। अधिक उत्पादन से शहरों में नई बढ़ी जनसंख्या हेतु खाद्यान्न की आपूर्ति सुनिश्चित हुई। अधिक कृषि उत्पादन से भू-स्वामियों ने लाभ कमाया जिसे उन्होंने उद्योगों के विकास में लगाया जिससे वे और अधिक धन कमा सकें। कृषि से निकले मज़दूरों के कारखानों में काम करने से उनकी आमदनी बढ़ी जिससे उनकी खर्च करने की क्षमता और मांग में वृद्धि हुई और अंततः इससे उद्योगों को बढ़ावा मिला।

डी.एल.पी. बुकलेट्स की विशेषताएँ

- आयोग के नवीनतम पैटर्न पर आधारित अध्ययन सामग्री।
- पैराग्राफ, बुलेट फॉर्म, सारणी, फ्लोचार्ट तथा मानचित्र का उपयुक्त समावेश।
- विषयवस्तु की सरलता, प्रामाणिकता तथा परीक्षा की दृष्टि से उपयोगिता पर विशेष ध्यान।
- प्रत्येक अध्याय के अंत में विगत वर्षों में पूछे गए एवं संभावित प्रश्नों का समावेश।

Website : www.drishtiIAS.com
E-mail : online@groupdrishti.com

DrishtiIAS

YouTube Drishti IAS

drishtiias

drishtithevisionfoundation

641, First Floor, Dr. Mukherjee Nagar, Delhi-110009
Phones : 011-47532596, +91-8130392354, 813039235456